नए राजा और राज्य

परिचय

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारत के विभिन्न भागों में अनेक **नए राज्यों** का उदय हुआ। प्रारंभिक मध्यकाल में कई शक्तिशाली राजाओं ने अपने राज्यों का विस्तार किया, युद्ध लड़े और प्रभावशाली प्रशासन स्थापित किया। इस अध्याय में नए राजाओं, प्रमुख राजवंशों तथा उनके शासन की विशेषताओं का अध्ययन किया गया है।

नए राज्यों का उदय

शक्तिशाली राजाओं का उदय

7वीं से 12वीं शताब्दी के बीच भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक क्षेत्रीय राज्यों का विकास हुआ।

प्रमुख राजवंश थे—

- **चोल**
- **राष्ट्रकूट**
- **पाल**
- **प्रतिहार**
- **चाहमान (चौहान)**

इन राजाओं ने युद्धों के माध्यम से अपने राज्यों का विस्तार किया।

राजाओं की शक्ति

सत्ता प्राप्त करने के साधन

राजा अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए—

- पड़ोसी राज्यों पर विजय प्राप्त करते थे।
- जनता से कर वसूलते थे।
- शक्तिशाली सेना रखते थे।
- प्रशासन चलाने के लिए अधिकारियों की नियुक्ति करते थे।
- मंदिरों का निर्माण करवाते और धार्मिक कार्यों को संरक्षण देते थे।

कई राजा अपनी शक्ति प्रदर्शित करने के लिए **अश्वमेध यज्ञ** भी करवाते थे।

राज्य का प्रशासन

शासन व्यवस्था

राजा राज्य का सर्वोच्च शासक होता था।

उसकी सहायता के लिए मंत्री और अधिकारी नियुक्त किए जाते थे।

प्रशासन के मुख्य कार्य—

- कर संग्रह।
- कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना।
- राज्य की सुरक्षा।
- गाँवों और नगरों का प्रबंधन।

स्थानीय प्रशासन में ग्राम सभाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

चोल साम्राज्य

दक्षिण भारत का शक्तिशाली राज्य

चोल वंश दक्षिण भारत का एक शक्तिशाली राजवंश था।

प्रमुख शासक—

- **राजराज प्रथम**
- **राजेंद्र प्रथम**

चोलों की प्रमुख उपलब्धियाँ—

- शक्तिशाली नौसेना।
- सुव्यवस्थित प्रशासन।
- व्यापार का विकास।
- **बृहदेश्वर मंदिर** जैसे भव्य मंदिरों का निर्माण।

राष्ट्रकूट एवं अन्य राजवंश

महत्वपूर्ण राज्य

राष्ट्रकूटों ने पश्चिमी और मध्य भारत के बड़े भाग पर शासन किया।

अन्य प्रमुख राजवंश—

- **पाल** (बंगाल)
- **प्रतिहार** (उत्तरी भारत)
- **चाहमान/चौहान** (राजस्थान)

इन राजवंशों के बीच **कन्नौज** पर अधिकार के लिए कई युद्ध हुए।

मंदिर और समाज

मंदिरों का महत्व

मंदिर केवल पूजा के स्थान नहीं थे, बल्कि—

- शिक्षा के केंद्र थे।
- कला और संस्कृति के संरक्षण स्थल थे।
- आर्थिक गतिविधियों के केंद्र थे।
- सामाजिक मेल-मिलाप के स्थान थे।

राजा मंदिरों को भूमि और धन दान देते थे।

व्यापार और अर्थव्यवस्था

आर्थिक विकास

कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था।

अन्य प्रमुख गतिविधियाँ—

- आंतरिक और समुद्री व्यापार।
- हस्तशिल्प का विकास।
- भूमि कर की व्यवस्था।
- नगरों और बाजारों का विस्तार।

इनसे राज्यों की समृद्धि बढ़ी।

मुख्य बिंदु

- गुप्त साम्राज्य के बाद अनेक नए राज्यों का उदय हुआ।
- चोल, राष्ट्रकूट, पाल और प्रतिहार प्रमुख राजवंश थे।
- राजाओं ने युद्धों और प्रशासन के माध्यम से अपनी शक्ति बढ़ाई।
- मंदिर धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक केंद्र थे।
- कृषि और व्यापार अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार थे।
- ग्राम सभाओं की स्थानीय प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका थी।

अध्याय सारांश

इस अध्याय में प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में नए राज्यों के उदय, प्रमुख राजवंशों और उनकी शासन व्यवस्था का अध्ययन किया गया। चोल, राष्ट्रकूट, पाल और प्रतिहार जैसे शक्तिशाली राजवंशों ने प्रशासन, व्यापार, कला और स्थापत्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन राज्यों ने भारतीय इतिहास और संस्कृति को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।